शिमला मिर्च की जैविक खेती

वैज्ञानिक नाम : Capsicum annuum

कुल : Solanaceae

शिमला मिर्च को बेल पेपर (Bell Pepper) या स्वीट पेपर (Sweet Pepper) भी कहा जाता है। इसकी खेती राज्य के विभिन्न जिलों में की जाती है। इसमें तीखापन नहीं होता, इसलिए इसका उपयोग सब्जी के रूप में एवं फास्ट फूड के रूप में ज्यादा होता है। राज्य में प्रायः हर मौसम में शिमला मिर्च की खेती की जाती है एवं अन्य राज्यों को इसकी आपूर्ति भी की जाती है। राज्य में इसकी जैविक खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है जिससे इसे दूसरे देशों को निर्यात भी किया जा सकेगा।

जलवायु एवं मिट्टी :

शिमला मिर्च एक रबी मौसम की सब्जी है, जिसे जनवरी-फरवरी में खेतों में लगाया जाता है। इसकी खेती पॉली हाउस में भी की जाने लगी है जिसमें अन्य मौसम में भी खेती सफलतापूर्वक की जाती है। बरसात में ज्यादा पानी के कारण पौधों को नुकसान होता है, फूलों के गिरने की समस्या होती है। फलने समय दिन का तापक्रम 26°—28° एवं रात्री तापक्रम 16°—18° सेल्सियस उपयुक्त है।

इसकी खेती कई तरह की मिट्टियों में की जा सकती है, पर बलूआही दोमट मिट्टी जिसका पी. एच. मान 5.8—6.8 हो, उत्तम है। मिट्टी का पी. एच. मान 5.5 से कम होने पर रोपाई के एक महीना पहले चूना का व्यवहार करें।

किस्में :

उन्नत किस्में : अरका मोहिनी, अरका वसंत, कैलिफोर्निया वंडर, येलो वंडर

संकर किस्में : पूसा दिप्ती, भारत, इन्द्रा, सन 1090, ग्रीन गोल्ड

बीज दर एवं बुआई का समय :

शिमला मिर्च के उन्नत किस्मों के बीज प्रति हेक्टेयर 500 ग्राम एवं संकर किस्म के 250-300 ग्राम की आवश्यकता होती है।

इसकी बुआई अगस्त-सितम्बर एवं फरवरी-मार्च में बिचड़ा हेतु पौधशला में की जाती है।

पौधशाला बनाना एवं बुआई :

पौधशाला को बनाने हेतु बेड एक मीटर चौड़ा, 10 से.मी. ऊँचा और लम्बाई आवश्यकतानुसार रखें। बेड को कुदाली से कोड़कर खरपतवार निकाल कर भुरभुरी कर दें। ट्राईकोडर्मा उपचारित गोबर की खाद एवं करंज खल्ली देकर अच्छी तरह मिला कर समतल कर दें। बेड पर पंक्ति में बीज गिराकर ढँक दें। फव्वारे से हल्की सिंचाई करें। बिचड़े 35—40 दिन में लगाने लायक हो जायेंगे। बीज को बोने से पहले बीजामृत से उपचारित कर लेना चाहिए।

खेत की जुताई एवं बिचड़ों की रोपाई :

जिस खेत में लगाना हो उसकी 2-3 बार जुताई कर मिट्टी को भुरभुरी करें तथा अन्तिम जुताई में कम्पोस्ट या गोबर की सड़ी खाद 250 क्विंटल/हे० की दर से देकर मिला दें। केंचुआ खाद तथा नीम/करंज की खल्ली भी दें ताकि दीमक का प्रकोप न हो। खेतों में पी. एस. बी. तथा एजोटोबैक्टर देने से फास्फोरस एवं नत्रजन की उपलब्धता बढ़ जाती है।

पौधशाला से बिचड़ों को सावधानी से उखाड़कर खेत में बने क्यारियों में 45 से.मी. × 45 से.मी. की दूरी पर रोपाई करें। बिचडों की रोपाई के बाद फव्वारे से पानी दें। संकर किस्मों के लिए यह दूरी 60 से.मी. × 45 से.मी. रखें।

कटाई-छटांई :

खेतों में लगाए गए शिमला मिर्च के पौधों के ऊपर के प्रथम एवं द्वितीय कोपल को हटा देने से पौधों की शाखाओं में वृद्धि होती है और ज्यादा संख्या में फूल आते हैं। पॉली हाऊस में उगाने पर ज्यादा कटाई-छटाई की जाती है। संकर किस्म के पौधों की स्टेकिंग की जाती है जिससे फल अच्छे मिलते हैं।

निकाई-गुड़ाई :

खेत में रोपाई के 20—25 बाद प्रथम निकाई-गुड़ाई की आवश्यकता होती है। इसके 25 दिन बाद फिर दूसरी निकाई-गुड़ाई करें तथा खेत को खरपतवार से मुक्त रखें। अन्तिम निकाई कर पौधों पर मिट्टी चढ़ा दें।

जैविक खाद :

पौधों की समुचित वृद्धि हेतु बी. डी. 500 एवं बी. डी. 501 का छिड़काव करने से फल ज्यादा लगते है एवं उपज में वृद्धि होती है। मिट्टी की सरंचना में भी सुधार होता है।

सिंचाई :

रोपाई के बाद हल्की सिंचाई अवश्य करनी चाहिए। इसके बाद हर दूसरे दिन फव्वारे से सिंचाई करें। फिर हर 10 दिन पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। ड्रीप सिंचाई विधि अपनाने से पानी की आवश्यकता कम हो जाती है और ज्यादा क्षेत्र में

फसल ली जा सकती है। पौधों के बढ़ते समय मिट्टी में नमी रहनी चाहिए अन्यथा फूल एवं फल के गिरने की सम्भावना बनी रहती है।

फलों की तुड़ाई :

पौधों की रोपाई के 8-10 सप्ताह बाद शिमला मिर्च के फल तोड़ने लायक हो जाते हैं। फलों के पूर्ण आकार पकड़ने पर हाथों से तुड़ाई कर लें। फिर हर 7-8 दिन पर तुड़ाई करते रहें। उन्नत किस्मों में 10-12 बार तुड़ाई की जा सकती है।

उपज :

शिमला मिर्च की उपज किस्म, मौसम, खाद इत्यादि पर निर्भर करती है। उन्नत किस्मों की उपज 250 क्विंटल प्रति हे. तथा संकर किस्मों से 450-500 क्विंटल / हे. फल प्राप्त होते हैं।

कीट प्रबंधन :

फल छेदक : गर्मी एवं वर्षा के दिनों में फली छेदक कीट शिमला मिर्च के फल में छेद कर गुदा को खा जाता है।

नीम निर्मित कीटनाशी (अचूक, निम्बोसिडीन, अमृत गार्ड, भेनगार्ड, नीमोल) 2.0 लीटर / हे. का छिड़काव करें। जैविक कीटनाशी जैसे- हेलियोकिल (0.5 मि.ली. / ली.पानी) का छिड़काव करें।

तना छेदक / पत्ता लपेटक : इसके प्रबंधन के लिए ट्राईकोग्रामा के 8—12 कार्ड प्रति हेक्टेयर की दर से पत्तियों के नीचे सतह पर लगा देतें हैं। ये कीड़े के अंडों को नष्ट कर देते हैं।

जैविक प्रमाणीकरण :

जैविक विधि द्वारा उत्पादन का जैविक प्रमाणीकरण आवश्यक है। प्रमाणीकरण होने पर उत्पादन का विक्रय मूल्य अधिक हो जाता है, जिससे किसानों की आय दोगुनी तक बढ़ जाती है। यह जैविक उत्पाद की गुणवत्ता एवं सत्यता को प्रमाणित करने के लिए तृतीय पक्ष द्वारा कराया गया एक मूल्याकंन है। किसानों को इसकी जानकारी प्राप्त कर उसके नियमानुसार कार्य करना चाहिए।

शिमला मिर्च की खेती में प्रति हेक्टेयर आय / व्यय

क्र०	कार्य विवरण	रू० में
1	खेत की जुताई, पाटा देना एवं क्यारी बनाना	2500.00
2	बीज पर व्यय	2000.00
3	पौधशाला बनाना, बुआई, निकाई एवं सिंचाई	1000.00
4	जैविक खाद:	
	क. गोबर की सड़ी खाद 250 क्विंटल @ Rs. 40/Qt.	10000.00
	ख. केंचुआ खाद 5.0 क्विंटल @ Rs. 600/Qt.	3000.00
	ग. नीम खल्ली / करंज खल्ली 5.0 क्विंटल @ Rs. 1000/Qt.	5000.00
5	बीजोपचार	100.00
6	रोपाई एवं देख-भाल	2000.00
7	सिंचाई	2500.00
8	निकाई-गुड़ाई एवं मिट्टी चढ़ाना	4000.00
9	पौध सरंक्षण (जैविक विधि)	2000.00
10	फलों की तुड़ाई	2000.00
11	वर्गीकरण, पैकिंग, ट्रांसपोर्ट	5000.00
12	खेत एवं बैंक राशि पर सूद	3300.00
13	अन्याय	5600.00
	कुल	**50000.00**
	उपज: 250 क्विंटल @ Rs. 1000/Qt.	250000.00
	शुद्ध आय: 200000.00 (दो लाख) रू. / हेक्टेयर या 80000.00 रू. / एकड़	

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :
डा० प्रभाकर सिंह, मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी
झारखण्ड जैविक कृषि प्राधिकार
सह निदेशक, झारखण्ड राज्य बागवानी मिशन
कृषि भवन परिसर, कांके रोड, राँची — 834008
फोन: 0651-2230789
website: www.organicjharkhand.in email: organicjharkhand2012@gmail.com

शिमला मिर्च की जैविक खेती

झारखण्ड जैविक कृषि प्राधिकार
कृषि भवन परिसर
कांके रोड, राँची - 834008 (झारखण्ड)